बी.ए. खण्ड-तृतीय हिन्दी (प्र०) अध्ययन सामग्री
डॉ०संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 06.04.2021

पत्र : अष्टम / साहित्य सिद्धांत और हिन्दी आलोचना

काव्य प्रयोजन का शेष ---

03. लांजाइनस :— लांजाइनस ने उपलब्ध अपने एक मात्र ग्रंथ 'परिइप्सुस' अर्थात् 'उदात्त के विषय में' अथवा 'काव्य में उदात्त तत्व'।

उदात्त के विषय में लांजाइनस करते हैं— 'वह वाणी का ऐसा वैशिष्ट्य है चरमोत्कर्ष है जिससे महान कवियों और इतिहासकारों को जीवन में प्रतिष्ठा और यश मिलता है। उदात्त के अंतर्गत चमत्कारवाद को स्थान नहीं है—'महान सृजन महान आत्मा की प्रतिध्वनि है।' वास्तव में लांजाइनस की दृष्टि मानव कल्पना में निहित विराट्ता की ओर थी। उदात्तता भी एक विशेष अर्थ में भाव परिष्कार, भाव-उन्नयन या विरेचन सिद्धांत ही है।

काव्य प्रयोजन को लेकर लांजाइनस ने रीतिवादी-चमत्कारवादी काव्य प्रयोजन का खंडन करते हुए लोकमंगलवादी (शिक्षा और आनंद) काव्यशास्त्र का समर्थन किया है। महान काव्य वही है जो सभी को सब कालों में आनंद प्रदान करें। इस प्रकार 'आनंद' या 'आत्मातिक्रमण' ही साहित्य का प्रधान प्रयोजन है।

स्पेंसर, मार्लो और शेक्सपियर की सृजन-दृष्टि में मानव की संवेदनात्मक, ज्ञानात्मक चेतना का विकास और परिष्कार ही काव्य प्रयोजन है।

साथ ही, 18वीं शताब्दी में डॉ० सैम्युअल जॉनसन, जॉन ड्राइडन, अलेक्जेंडर पोप, जोसेफ एडिसन आदि ने साहित्य-प्रयोजन के रूप में आनंद और नैतिक आदर्शों की शिक्षा को महत्व दिया है।

काडवेल से लेकर जार्ज लूकाच तक सभी मार्क्सवादी चिन्तक साहित्य का उद्देश्य मानव-कल्याण की भावना की अभिव्यक्ति को मानते हैं।

हिन्दी के कवि / आलोचकों ने ~~विभिन्न~~ भी ~~प्रकार से~~ काव्य-प्रयोजन के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए हैं।

(१) हिन्दी के आचार्यों कुलपतियों, देव, भिखारीदास

आदि ने संस्कृत आचार्यों द्वारा निर्धारित काव्य प्रयोजन की ही चर्चा की है। कवियों में तुलसीदास ने 'स्वान्त: सुखाय तुलसी गाथा' कहकर 'स्वान्त सुखाय' और 'लोकमंगल' (कीरति भनिति भूति भलि सोई, सुरसरि सम सब कहँ हित होई) को ही काव्य का प्रयोजन कहा है।

सुमित्रानंदन पंत ने भी 'स्वान्त: सुखाय और बहुजन हिताय' को काव्य का प्रयोजन मानते हैं।

हिन्दी के भक्त कवियों का काव्य-प्रयोजन एक ही है — 'मानुष प्रेम भयउ बैकुंठी' अर्थात् काव्य का मुख्य उद्देश्य प्रेम है और प्रेम ही जीवन को उदात्त बनाता है। बैर नहीं। प्रेम से ही मनुष्य बैकुंठी या दिव्य बन सकता है। इस को सगुण और निर्गुण दोनों ही भक्त कवियों ने माना है।